बी॰ए॰ खण्ड-प्रथम / हिन्दी (प्र०) / अध्ययन सामग्री

डॉ॰ संतोष कुमार, सहायक प्राचार्य, हिन्दी विभाग,
भारती मंडन महाविद्यालय, रहिका, मधुबनी

पत्र : द्वितीय / प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

दिनांक : 27.07.2020

कबीर के 'प्रेम' शीर्षक साखियाँ

~~[illegible]~~

कबीर वचनावली में 'प्रेम' शीर्षक के अंतर्गत कुल -30 (क्र०सं० 101 से क्र०सं०-130) साखियाँ संकलित है। इसके संग्रहकर्ता अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' है। जैसे पूर्व के वर्ग में बताया गया है कि इस 'प्रेम' शीर्षक साखियाँ के अंतर्गत वे भक्त और भगवान के बीच प्रेम को दिखाया है। उनके इष्टदेव निर्गुण और निरंकार है, जो सर्वव्यापी है। ~~[illegible]~~ कबीर प्रेम की की महत्ता लौकिक से अलौकिक की ओर प्रतिपादित करते है।

अब, साखी क्या है?

वास्तव में कबीर के द्वारा रचे गये ज्ञान के पद, जो दोहा छंद में लिखे गये है, साखी कहलाती है। 'साखी' शब्द संस्कृत भाषा के 'साक्षित' अर्थात् साक्षी से लिया गया है। हम जानते है कि हिन्दी भाषा में 75% शब्द लगभग तत्सम् श्रेणी के अंतर्गत है, वे संस्कृत भाषा से लिए गए है। साखी का प्रयोग पूर्व से ही चला आ रहा था। किन्तु हिन्दी साहित्य में साखी का व्यापक प्रचार कबीर के द्वारा ही किया गया। कबीर ने साखी को 'ज्ञान की आँख' कहा है। ऐसा इसलिए की उनका मानना था कि निर्गुण, निरंकार ब्रह्म की प्राप्ति ही ज्ञान की सार्थकता है।

साखी अपभ्रंश काल में भी ~~ब~~ बहुप्रचलित था। उस समय का 'दूहा' छंद ही बाद में दोहा हो गया।

Scanned with CamScanner

कबीर की रचनाओं में साखियों का बड़ा महत्व है। उनकी रचनाओं में सर्वाधिक साखियाँ ही पायी जाती है।

~~कबीर~~ कबीर को अक्षर ज्ञान नहीं था। अर्थात वे पढ़ना-लिखना नहीं जानते थे। वे स्वयं इस बात को स्वीकार करते हैं — ~~"मसि कागद तो छुयो नहिं, कलम गही नहिं हाथ।~~

"मसि कागद तो छुयो नहिं, कलम गही नहिं हाथ।
चारिहूँ युग महात्म्य तेहि, कहि के जनायो नाथ॥"

बाद में, उनके शिष्यों द्वारा उनके उपदेशों को संग्रहीत किया गया। कबीर ने अपना उपदेश मौखिक दिया।

कबीर बीजक में 353, कबीर ग्रंथावली में 919 साखियाँ हैं। आदिग्रंथ में उसे ही 'श्लोक' कहा गया है, जिसकी सं० - 243 है। कबीर के साखी का क्षेत्र व्यापक है, जिनमें नैतिक, आध्यात्मिक, लौकिक और परलौकिक विषयों का वर्णन किया गया है।

अब, छंद क्या है?

"अक्षर, अक्षरों की सं० एवं क्रम, मात्रा गणना तथा यति-गति से संबंधित विशिष्ट नियमों से नियोजित पद्य 'छंद' रचना कहलाती है। यह 'चादि' धातु से निकला है, ऐसा पाणिनि कहते हैं। परन्तु, यास्क ने निरुक्त में इसकी व्युत्पत्ति 'छदि' धातु से माना है, जिसका अर्थ आच्छादन होता है। प्राय: सभी भाषाओं के प्राचीन ग्रंथ 'छन्द' में ही लिपिबद्ध हैं। कारण :- छंदबद्ध रचनाएँ याद करने में सहूलियत होती है और याद की गयी पद्य शीघ्र विस्मृत नहीं होती।

अब, दोहा छंद क्या है?

दोहा एक मात्रिक छंद है, जिसके पहले और तीसरे चरण में 13-13 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरणों में 11-11 मात्राएँ होती है। दूसरे और चौथे चरण में तुक का होना भी अनिवार्य है।

Scanned with CamScanner